MODEL PAPER – 4

समय : 3 घंटा 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर-पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
4. इस प्रश्न पत्र को धयानपूर्वक पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
5. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में है, खण्ड-अ एवं खण्ड-ब।
6. **खण्ड-अ** में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। 50 से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 प्रश्नों का ही मूल्यांकन किया जायगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। इनका उत्तर उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर-पत्रक में दिये गये सही विकल्प को नीले/काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें। किसी भी प्रकार के ह्वाइटनर/तरल पदार्थ/ब्लेड/नाखून आदि का OMR उत्तर-पत्रक में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
7. **खण्ड-ब** में कुल 6 विषयनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के समक्ष अंक निर्धारित हैं।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।

खण्ड-अ : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

❑ प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिए गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गये सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। **50 × 1 = 50**

1. 'मानवता' शब्द में कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) भाववाचक (D) समूहवाचक

2. 'मोती' का लिंग निर्णय करें :
(A) पुलिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

3. 'कामायनी' महाकाव्य में कामायनी कौन है ?
(A) मनु (B) श्रद्धा (C) इड़ा (D) रूपा

4. चिंतामणि किस काल के कवि थे ?
(A) आदिकाल (B) भक्तिकाल
(C) रीतिकाल (D) आधुनिक काल

5. 'शिक्षा' हिन्दी साहित्य में किस विधा के अंतर्गत है ?
(A) संभाषण (B) डायरी लेखन
(C) आत्मकथा (D) ऐतिहासिक संस्मरण

6. 'क' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) कंठ (B) तालु (C) मूर्द्धा (D) ओष्ठ

7. 'आयु' शब्द क्या है ?
(A) पुलिंग (B) स्त्रीलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

8. 'बच्चे घर में है'-किस कारक का उदाहरण है ?
(A) कर्त्ता (B) कर्म (C) अधिकरण (D) संबोधन

9. मलयज का मूल नाम था__
(A) रमेश श्रीवास्तव (B) भरतजी श्रीवास्तव
(C) सुधार श्रीवास्तव (D) रामेश्वर श्रीवास्तव

10. 'तिरिछ' पाठ में पिताजी की मृत्यु कैसे होती है?
(A) तिरिछ के काटने से (B) धतूरे की जहर से
(C) दुर्घटना से
(D) मानसिक सदमे और अधिक रक्तस्राव से

11. 'द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम' किसकी कृति है?
(A) अब्दुल कलाम आजाद (B) पट्टाभि सीतारमैया
(C) जे० कृष्णमूर्ति (D) जाबिर हुसैन

12. जायसी रचित 'पद्मावत' की भाषा क्या है?
(A) अवधी (B) ब्रज (C) खड़ीबोली (D) अवसाद

13. वल्लभाचार्य से मिलने से पूर्व सूर किस भाव के पद गाते थे?
(A) प्रेम (B) विरक्ति (C) दैन्य (D) अवसाद

14. इनमें से कौन-सी रचना तुलसी की है?
(A) लग्नपत्रिका (B) प्रणयपत्रिका
(C) सीता स्वयंवर (D) विनयपत्रिका

15. 'कानि' का अर्थ होता है?
(A) एक आँख का न होना (B) एक कानवाला
(C) अविश्वास (D) विश्वास, प्रतीति

16. शिवाजी के पुत्र का नाम था__
(A) रुद्रप्रताप (B) शाहूजी (C) भानुप्रताप (D) यज्ञसेन

17. प्रसादजी के पिता का नाम था__
(A) रविरत्न प्रसाद साहु (B) देवी प्रसाद साहु
(C) कालिका प्रसाद साहु (D) चोंडिका प्रसाद साहु

18. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कब हुआ?
(A) 16 अगस्त, 1904 ई० को (B) 2० जुलाई, 1920 ई० को
(C) 18 मई, 1930 ई० को (D) 12 अगस्त, 1905 ई० को

19. कौन-सी कृति शमशेर बहादुर सिंह की नहीं है?
(A) इतने पास अपने (B) उदिता
(C) टूटी हुई बिखरी हुई (D) भारत : इतिहास और संस्कृति

20. कौन-सी रचना मुक्तिबोध की है?
(A) दिव्यदान (B) मुझे चाँद चाहिए
(C) भोर का तारा (D) चाँद का मुँह टेढ़ा

21. सरोज किस संधि का उदाहरण है?
(A) स्वर संधि (B) व्यंजन संधि
(C) विसर्ग संधि (D) इनमें से कोई नहीं

22. परमात्मा किस संधि का उदाहरण है?
(A) यण संधि (B) गुण संधि
(C) वृद्धि संधि (D) दीर्घ संधि

23. 'नवग्रह' शब्द किस समास का उदाहरण है?
(A) द्विगु (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

24. अधिकरण तत्पुरुष में__
(A) पहला पद प्रधान होता है (B) दूसरा पद का प्रधान होता है
(C) दोनों पद प्रधान होते है
(D) प्रथम एवं तृतीय पद प्रधान होता है

25. 'चतुरानन' शब्द किस समास का उदाहरण है ?
(A) बहुव्रीहि (B) अव्ययीभाव
(C) कर्मधारण (D) तत्पुरुष

26. अनुकूल का विलोम है?
(A) प्रतिकूल (B) विल्कूल
(C) अनु (D) कूल

27. श्रीगणेश का विलोम है?
(A) श्रीराधा (B) विनाश
(C) इतिश्री (D) इनमें से कोई नहीं

28. मानव का विलोम है?
(A) राक्षस (B) दानव (C) आदमी (D) मनुष्य

29. निम्नलिखित में स्त्री प्रत्यय होगा?
(A) नशीला (B) भवदीय (C) भावुक (D) याचिका

30. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द प्रत्यय से बना है?
(A) देहदान (B) पीकदान (C) जीवनदान (D) धनदान

31. पति का पर्यायवाची नहीं है?
(A) वल्लभ (B) स्वामी (C) भार्वा (D) भर्ता

32. अमिय का पर्यायवाची है?
(A) विष (B) सुधा (C) मधुप (D) आम्र

33. 'उड़न छू होना' मुहावरा का क्या अर्थ होगा?
(A) जादू करना (B) संकट देखकर भागना
(C) नजर न आना (D) डर का छिपना

34. 'कामकाज में कोरा होना' मुहावरा का क्या अर्थ होगा?
(A) काम न करना (B) काम समाप्त करना
(C) काम पूरा न करना (D) काम न जानना

35. आरोग्य का पर्यायवाची नहीं है?
(A) स्वास्थ्य (B) सेहत (C) अरोगता (D) तंदुरुस्ती

36. अतनु का पर्यायवाची है?
(A) ईश्वर (B) कृष्ण (C) कामदेव (D) बसंत

37. अनिल का पर्यायवाची है?
(A) चक्रवात (B) पावस (C) पवन (D) अनल

38. निर्वाह में कौन-सा उपसर्ग है?
(A) निरि (B) नि (C) निर (D) निः

39. 'गमन्' शब्द को विपरीतार्थक बनाने के लिए आप किस उपसर्ग का प्रयोग करेंगे?
(A) उप (B) आ (C) प्रति (D) अनु

40. संकल्प में कौन-सा उपसर्ग है?
(A) स (B) सन् (C) सम् (D) स

41. हिन्दी साहित्य का 'सूर्य' किसे कहा जाता है?
(A) सूरदास (B) कबीरदास (C) तुलसीदास (D) जायसी

42. 'संध्या' का विलोम है—
(A) प्रात (B) प्रातः (C) निशा (D) रात्रि

43. 'आदान' का विपरीतार्थक है—
(A) प्रदान (B) दान (C) त्याग (D) अपर्ण

44. आँसू शब्द है—
(A) तत्सम (B) तद्भव (C) देशज (D) विदेशज

45. 'बीजक' के रचयिता कौन हैं?
(A) तुलसीदास (B) कबीरदास (C) सूरदास (D) जायसी

46. 'गोद में सोने वाला' कहलाता है—
(A) बालक (B) पुत्र (C) अंकशायी (D) अंकस्थ

47. 'गुरू के समीप रहनेवाला विद्यार्थी' कहलाता है—
(A) बजबटुक (B) ब्रह्मचारी (C) अंतेवासी (D) गुरूकुल

48. 'भूषण' की कविता में कौन रस पाया जाता है?
(A) शृंगार रस (B) भक्ति रस (C) वीर रस (D) वात्सल्य रस

49. 'अनल' शब्द का पर्यायवाची होगा—
(A) आग (B) हवा (C) पानी (D) सूखा

50. 'आयुष्मान' शब्द का पर्यायवाची होगा—
(A) पुत्र (B) शिष्य (C) चिरंजीव (D) धनवान

51. 'मैं असहाय विवश बैठी ही रही उठ गया छौना मेरा''—यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है?
(A) गाँव का घर (B) हार-जीत (C) पुत्र वियोग (D) उषा

52. वाक्य के आवश्यक अंग है—
(A) एक (B) दो (C) तीन (D) चार

53. 'बातचीत' शीर्षक निबंध के अनुसार जो कुछ मवाद या थुआँ जमा रहता है, वह भाप बनकर निकल पड़ता है। कैसे?—
(A) बहस करके (B) झगड़ा करके
(C) बातचीत के जरिए (D) हँसने से

54. 'शिवालय' शब्द कौन समास है?
(A) नञ् समास (B) अव्ययीभाव समास
(C) तत्पुरुष समास (D) कर्मधारय समास

55. 'तीर्थयात्रा' शब्द कौन समास है?
(A) द्विगु समास (B) बहुव्रीहि समास
(C) तत्पुरुष समास (D) अव्ययीभाव समास

56. 'मालती' किस कहानी की पात्रा है?
(A) सिपाही की माँ (B) रोज
(C) तिरिछ (D) गौरा

57. 'अंकुरित' शब्द में प्रत्यय है—
(A) अ (B) रित (C) इत (D) त

58. 'हास्यास्पद' शब्द में प्रत्यय है—
(A) द (B) स्पद (C) यास्पद (D) आस्पद

59. 'ओ सदानीरा' शीर्षक पाठ किस विद्या के अन्तर्गत आता है?
(A) निबन्ध (B) कहानी (C) कविता (D) नाटक

60. 'रोटी मत खाओ, क्योंकि वह जली है'—कौन सर्वनाम है?
(A) अनिश्चयवाचक (B) संबंधवाचक
(C) निश्चयवाचक (D) प्रश्नवाचक

61. वह कौन है, जो पड़ा रो रहा है—किस सर्वनाम का उदाहरण है?
(A) निश्चयवाचक (B) संबंधवाचक
(C) प्रश्नवाचक (D) अनिश्चयवाचक

62. वसुंधराभोगी मानव और धर्मांध मानव—एक ही सिक्के के दो पहलू हैं—यह पंक्ति किसके द्वारा लिखी गयी है?
(A) उदय प्रकाश (B) जे० कृष्णमूर्ति
(C) मलयज (D) जगदीशचंद्र माथुर

63. मोहन राकेश के बचपन का क्या नाम था?
(A) मदन मोहन मुगलानी (B) कृष्णमोहन मुगलानी
(C) राधाकृष्ण मुगलानी (D) रामकृष्ण मुगलानी

64. 'ओ सदानीरा' शीर्षक निबंध में वर्णित मन कैसे ताल हैं?
(A) गहरे (B) छोटे और विशाल
(C) उथले और छिछले (D) गहरे और विशाल

65. 'अब तक वह सो गया होगा।' वाक्य है—
(A) विधिवाचक (B) इच्छावाचक
(C) संदेशवाचक (D) आज्ञावाचक

66. 'चित्ररेखा' किस कवि की रचना है?
(A) जायसी (B) मुक्तिबोध
(C) जयशंकर प्रसाद (D) रघुवीर सहाय

67. हिन्दी साहित्य में गजानन माधव मुक्तिबोध का उदय कैसे कवि के रूप में हुआ?
(A) प्रयोगवादी (B) प्रगतिवादी
(C) प्रपद्यवादी (D) छायावादी

68. 'हाथ का मैल होना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) गंदा होना (B) कीमती होना
(C) तुच्छ होना (D) सच होना

69. 'तूती बोलना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) बदल जाना (B) धाक जमना
(C) दुःखी होना (D) आवाज बिगड़ जाना

70. ज्ञानेन्द्रपति बिहार लोकसेवा आयोग द्वारा चयनित होकर किस पद पर पदस्थापित हुए?
(A) प्रखण्ड विकास पदाधिकारी (B) कारा-अधीक्षक
(C) पुलिस-उपाधीक्षक (D) अंचलाधिकारी

71. 'वैद्य' का विलोम है—
(A) नवैद्य (B) अवैद्य
(C) कुवैद्य (D) इनमें से कोई नहीं

72. 'नयन' का सन्धि-विच्छेद है—
(A) ने + अन (B) न + यन
(C) ने + एन (D) इनमें से कोई नहीं

73. 'बातचीत' शीर्षक के निबन्धकार है—
(A) नामवर सिंह (B) बालकृष्ण भट्ट
(C) जे॰ कृष्णमूर्ति (D) उदय प्रकाश

74. 'आनन्दित' में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) दित (B) इत (C) दित् (D) इत्

75. 'अक्ल का अंधा' मुहावरे का अर्थ है—
(A) दृष्टिहीन होना (B) मुर्ख होना
(C) चालाक होना (D) इनमें से कोई नहीं

76. कौन-सी रचना बालकृष्ण भट्ट की नहीं है?
(A) नूतन ब्रह्मचारी (B) सौ अजान एक सुजान
(C) सद्भाव का अभाव (D) परीक्षा गुरु

77. भारतीय सिपाहियों का किसके साथ संघर्ष हुआ था?
(A) फ्रांसीसियों के साथ (B) तुर्कों के साथ
(C) अँगरेजों के साथ (D) जर्मनों के साथ

78. किस अस्पताल में 'दिनकर' का निधन हुआ था?
(A) अपोलो अस्पताल (B) श्रीराम नर्सिंग होम
(C) पी॰एम॰सी॰एच॰, पटना (D) विलिंगडन नर्सिंग होम

79. 'दिनकर' को किस कृति पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ?
(A) अर्धनारीश्वर (B) उर्वशी
(C) हुँकार (D) कुरुक्षेत्र

80. कौन-सी रचना अज्ञेय की नहीं है?
(A) अपने-अपने अजनबी (B) भग्नदूत
(C) एक बूँद सहसा उछली (D) तिरिछ

81. कौन-सा निबंध भगत सिंह का लिखा हुआ नहीं है?
(A) अछूत समस्या (B) सत्याग्रह और हड़तालें
(C) नवरात्र (D) मैं नास्तिक क्यों हूँ

82. 'तीनकठिया' प्रथा का संबंध है—
(A) ईख से (B) तम्बाकू से
(C) मसाला से (D) नील से

83. निम्नलिखित में बिशनी की पड़ोसिन कौन है?
(A) आभा (B) विमला
(C) कुन्ती (D) माधुरी

84. कौन-सी पुस्तक नामवर सिंह की है?
(A) पीली छतरीवाली लड़की (B) 'पृथ्वीराज रासो की भाषा'
(C) अंतराल (D) न आनेवाला कल

85. 'जूठन' क्या है?
(A) कहानी (B) उपन्यास
(C) रिपोर्ताज (D) आत्मकथा

86. 'आपको क्या चाहिए?' वाक्य है—
(A) आज्ञावाचक (B) इच्छावाचक
(C) प्रश्नवाचक (D) विधिवाचक

87. 'आपकी यात्रा मंगलमय हो।' वाक्य है—
(A) संदेहवाचक (B) इच्छावाचक
(C) विधिवाचक (D) प्रश्नवाचक

88. किनका लेखन विकसित या विकासशील दुनिया तथा अविकसित अफ्रीका के बीच की दूरी दिखाता है?
(A) मोपासाँ (B) लोपेज (C) चेखव (D) मलयज

89. 'अदरख' शब्द है—
(A) स्त्रीलिंग (B) पुंल्लिग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

90. 'गुस्सा' शब्द है—
(A) स्त्रीलिंग (B) पुंल्लिग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

91. 'नीरस' का संधि-विच्छेद है—
(A) नी + रस (B) नि + रस
(C) निः + रस (D) निर् + रस

92. कहानी विद्या को आधुनिक रूप देने में किनका स्मरणीय योगदान है?
(A) मोपासाँ (B) चेखव
(C) लोपेज (D) इनमें से कोई नहीं

93. 'संसार' शब्द कौन संज्ञा है?
(A) समूहवाचक (B) जातिवाचक
(C) व्यक्तिवाचक (D) भाववाचक

94. अंतोन चेखव की कहानी है—
(A) क्लर्क की मौत (B) पेशगी
(C) रस्सी का टुकड़ा (D) इनमें से कोई नहीं

95. 'गीदड़ भभकी देना' मुहावरा का अर्थ है—
(A) डींक हाँकना (B) झूठा डर दिखाना
(C) बढ़ा-चढ़ाकर बताना (D) क्षमता से बाहर कार्य करना

96. 'विद्यालय' का सन्धि-विच्छेद है—
(A) विद्या + लय (B) विद्या + आलय
(C) विद्या + अलय (D) वि + आलय

97. 'आपे से बाहर होना' मुहावरे का अर्थ है—
(A) घर से बाहर हो जाना (B) भला-बुरा न समझना
(C) बहुत क्रोधित होना (D) व्यर्थ की बाते करना

98. 'गाँव का घर' शीर्षक कविता किस कविता-संग्रह से ली गई है?
(A) मातृभूमि (B) पुत्र-वियोग (C) संशयात्मा (D) उषा

99. 'सूरसागर' के कवि है—
(A) मातृभूमि (B) सूरदास (C) नाभादास (D) कुम्भनदास

100. 'सिपाही की माँ' कहानी के कहानीकार है—
(A) अज्ञेय (B) मोहन राकेश
(C) मलयज (D) बालकृष्ण भट्ट

खण्ड-ब : विषयनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : 1 × 8 = 8

(i) समाचार-पत्र
(ii) भूकम्प
(iii) हमारे प्रिय लेखक : प्रेमचंद
(iv) नारी सशक्तिकरण
(v) मोबाइल और विद्यार्थी
(vi) आतंकवाद

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें : $2 \times 4 = 8$

(क) "वसुन्धरा भोगी मानव और धर्माध मानव
एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"

(ख) "पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह देवता बन जाता है, किंतु नारी जब नर के गुण सीखती है तब वह राक्षसी हो जाती है।"

(ग) "चाँद जइस जग बिधि औतारा
दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा।"

(घ) "तड़प रहे हैं विकल प्राण ये
मुझको पल भर शांति नहीं है
वह खोया धन पा न सकूँगी
इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है।"

3. अपने प्रधानाचार्य के पास एक आवेदन-पत्र लिखें जिसमें आर्थिक सहायता के लिए अनुरोध हो। $1 \times 5 = 5$

अथवा,

अपने मित्र के पास एक पत्र लिखें जिसमें 'कोरोना-काल' की किसी दुःखद घटना की चर्चा हो।

4. निम्नांकित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें : $5 \times 2 = 10$

(i) चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता बढ़ने के क्या कारण हैं ?

(ii) भगत सिंह कौन थे ?

(iii) फिरंगी मेम के बाग में क्या-क्या था ?

(iv) लेखक के अनुसार सुरक्षा कहाँ है ? वह डायरी को किस रूप में देखना चाहता है ?

(v) बँधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है ?

(vi) तुलसीदास रचित प्रथम पद (कबहुँक अंब) का भावार्थ लिखिए।

(vii) कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है ?

(viii) 'जय-जय कराना' का क्या अर्थ है ?

(ix) कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का कवि परिचय दें।

(x) बिटिया कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दें : $3 \times 5 = 15$

(i) 'रोज' शीर्षक कहानी का सारांश लिखिए।

(ii) गाँधी जी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे ?

(iii) दलहीन लोकतंत्र और साम्यवाद में कैसा संबंध है ?

(iv) 'कड़बक' शीर्षक कविता के प्रथम पद का भावार्थ लिखें।

(v) 'गाँव का घर' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें।

(vi) नदियों की वेदना का क्या कारण है ?

6. निम्नलिखित अवतरणों में से किसी एक का संक्षेपण कीजिए : $1 \times 4 = 4$

(i) शक्ति या ऊर्जा के कई साधन हैं। परन्तु, विद्युत या बिजली विविध उपयोगवाली एवं सबसे सुविधाजनक ऊर्जा है। यही कारण है कि ऊर्जा के अन्य साधनों की अपेक्षा इसकी माँग में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। इसके साथ ही जनसंख्या में वृद्धि, देश के औद्योगीकरण एवं कृषि के आधुनिकीकरण के कारण बिजली की माँग निरंतर बढ़ रही है। परंतु, विद्युत परियोजनाओं में भारी निवेश के बावजूद अभी देश में बिजली की बहुत कमी है। इसका कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बिजली की माँग और इसकी पूर्ति को देखते हुए हम कह सकते हैं कि अगले कुछ वर्षों तक इसकी कमी बनी रहेगी। अतः, बिजली की बर्बादी को रोकना और इसके उपयोग में बचत करना अत्यंत आवश्यक है।

(ii) सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है। सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है, संस्कृति उसके अंतर के विकास का। सभ्यता की दृष्टि वर्त्तमान की सुविधा-असुविधा पर रहती है, संस्कृति की भविष्य या अतीत के आदर्श पर। सभ्यता के निकट कानून मनुष्य से बड़ी चीज है, लेकिन संस्कृति की दृष्टि से मनुष्य कानून से परे है, सभ्यता बाह्य होने के कारण चंचल है, संस्कृति आंतरिक होने के कारण स्थायी। सभ्यता समाज को सुरक्षित रखकर उसके व्यक्तियों को इस बात की सुविधा देती है कि वे अपना आंतरिक विकास करें।

व्याख्यासहित उत्तर

खण्ड 'अ'

OMR ANSWER-SHEET

1.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	51.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
2.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	52.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
3.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	53.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
4.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	54.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
5.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	55.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
6.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	56.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
7.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	57.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
8.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	58.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
9.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	59.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
10.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	60.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
11.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	61.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
12.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	62.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
13.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	63.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
14.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	64.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
15.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	65.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
16.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	66.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
17.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	67.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
18.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	68.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
19.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	69.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
20.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	70.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
21.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	71.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
22.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	72.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
23.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	73.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
24.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	74.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
25.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	75.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
26.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	76.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
27.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	77.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
28.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	78.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
29.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	79.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
30.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	80.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
31.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	81.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
32.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	82.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
33.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	83.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
34.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	84.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
35.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	85.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
36.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	86.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
37.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	87.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
38.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	88.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
39.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	89.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
40.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	90.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
41.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	91.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
42.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	92.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
43.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	93.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
44.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	94.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
45.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	95.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
46.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	96.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
47.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	97.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
48.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	98.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
49.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	99.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
50.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	100.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ

ANSWER

1. (C)	2. (A)	3. (B)	4. (C)	5. (A)
6. (A)	7. (B)	8. (C)	9. (B)	10. (D)
11. (C)	12. (A)	13. (C)	14. (D)	15. (D)
16. (B)	17. (B)	18. (A)	19. (D)	20. (D)
21. (C)	22. (D)	23. (A)	24. (B)	25. (A)
26. (A)	27. (C)	28. (B)	29. (D)	30. (B)
31. (C)	32. (B)	33. (B)	34. (D)	35. (C)
36. (D)	37. (C)	38. (C)	39. (B)	40. (C)
41. (A)	42. (B)	43. (A)	44. (B)	45. (B)
46. (C)	47. (C)	48. (C)	49. (A)	50. (C)
51. (C)	52. (B)	53. (C)	54. (C)	55. (C)
56. (B)	57. (C)	58. (D)	59. (A)	60. (C)
61. (B)	62. (D)	63. (A)	64. (D)	65. (C)
66. (A)	67. (A)	68. (C)	69. (B)	70. (B)
71. (B)	72. (A)	73. (B)	74. (B)	75. (B)
76. (D)	77. (D)	78. (D)	79. (B)	80. (D)
81. (C)	82. (D)	83. (C)	84. (B)	85. (D)
86. (C)	87. (B)	88. (B)	89. (B)	90. (B)
91. (C)	92. (A)	93. (C)	94. (A)	95. (B)
96. (B)	97. (C)	98. (C)	99. (B)	100. (B)

खण्ड – ब

1.

(i) समाचार-पत्र

आज समाचार-पत्रों का युग है। वे हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गये हैं। यह हमें विश्व के बारे में ताजी सूचना देता है। जब हम सुबह में सबेरे उठते हैं, तो हमलोग समाचार-पत्र का इन्तजार करते हैं। इसे पढ़े बिना ऐसा लगता है कि हमसे कोई बहुत उपयोगी वस्तु खो गयी है। इस प्रकार, यह हमारे लिए बहुत उपयोगी और आवश्यक वस्तु है।

समाचार-पत्र आधुनिक युग के लिए एक वरदान है। हमलोग विज्ञान के युग में रहते हैं। विज्ञान ने विश्व के लोगों को एक ही परिवार के सदस्यों की तरह बना दिया है। हमलोग उन सभी चीजों को जानना चाहते हैं, जो न केवल हमारे ही देश में, बल्कि विश्व के दूसरे देशों में भी हो रही है। यह विश्व के सभी समाचारों तथा विचारों को हमारे पास पहुँचाता है। यह विश्व की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं से हमें अवगत कराता है। इसका शैक्षणिक महत्त्व भी है। हमलोग अनेक विषयों पर लिखे हुए निबन्ध पढ़ते हैं। यह विश्व के वाणिज्य और व्यापार का समाचार भी देता है। इस प्रकार, यह राष्ट्रों के बीच व्यापार को सुगम बनाता है।

समाचार-पत्र विज्ञान और प्रचार का स्रोत होता है। व्यापारी इसके द्वारा अपना प्रचार करते हैं। अगर कोई व्यक्ति बेरोजगार है, तो वह इसके द्वारा विभिन्न तरह की रिक्तियाँ जान सकता है। व्यापारी विभिन्न वस्तुओं के मूल्य जान सकता है। यह हमें प्रेरित करता है और हमें सूचना उपलब्ध कराता है। यह सरकार और जनता के बीच की एक कड़ी है। इसके द्वारा हम सरकार के समक्ष अपनी आवाज उठा सकते हैं। यह जनता की शिकायत को सरकार के समक्ष प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, अखबार ज्ञान और मनोरंजन का एक साधन है। यह प्रचार का बहुत प्रभावशाली साधन है। यह हमें अपने देश और विश्व के बारे में नये समाचार देता है। यह जनता के हितों तथा अधिकारों को भी सुरक्षित रखता है।

(ii) भूकम्प

भूकम्प का अर्थ है-पृथ्वी का हिलना। पृथ्वी एक सघन गोला है और इसकी सतह पर हम रहते हैं। परन्तु उसके गर्भ में नित्य हलचल होती रहती है। इसी हलचल के कारण भीतरी चट्टानें हिलती रहती हैं। कभी-कभी यह कंपन इतना जबरदस्त होता है कि पृथ्वी की सतह में बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाता है। चट्टानें खिसक जाती हैं। पृथ्वी की सतह में दरारें आ जाती है। कहीं-कहीं नए जल-स्रोत निकल आते हैं तो कहीं पुराने स्रोत बंद हो जाते हैं। प्रकृति का यह परिवर्तन यदि प्रकृति तक ही सीमित होता है, तो इसका भयानक रूप सामने न आता। परन्तु भूकम्प के कारण मानव-जीवन तहस-नहस हो जाता है। कई बार तो पूरे के पूरे गाँव और नगर भूमि में समा जाते हैं। उसका नामोनिशान मिट जाता है।

भारत के इतिहास में सबसे बड़ा भूकम्प 11 अक्टूबर, 1737 को बंगाल में आया था। उसमें लगभग तीन लाख लोग धरती में समा गए थे। गाँव के गाँव मिट्टी के ढूहों में बदल गए थे। महाराष्ट्र के लातूर में आया भूकम्प भी रोंगटे खड़े करने वाला था। तीसरी सहस्राब्दी में कदम रखते ही 26 जनवरी 2003 को गुजरात के भुज क्षेत्र में जो विनाशकारी भूकम्प आया था, इसको याद करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सुबह-सुबह लोग उठे भी न थे कि बड़ी-बड़ी बहुमंजिलें इमारतें ताश के महल की भाँति भरभरा कर गिर पड़ीं। इससे पहले कि लोग घरों से बाहर निकलते, पूरा भुज क्षेत्र ध्वंस के ढेर में समा चुका था।

भूगोलविद् बताते हैं कि उत्तर भारत का क्षेत्र अब भी भूकम्प की आशंकाओं से ग्रस्त है। हरियाणा के जींद क्षेत्र में नित्य हलके-हलके झटके महसूस किए जाते हैं। विज्ञान में इतनी क्षमता नहीं है कि वह प्रकृति के इस कोप को रोक सके। परन्तु यत्न करके इसके विनाश से बचने के उपाय सोचे जा सकते हैं।

जापान जैसे भूकम्पीय क्षेत्र के लोगों के घर लकड़ी से बने होते हैं। इससे जान माल की हानि अपेक्षाकृत कम होती है। मैदानी क्षेत्रों में भूकम्परोधी भवन-निर्माण तकनीक को अपनाया जाना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह जन-सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए भवन-निर्माण में भूकम्प- सुरक्षा के उपाय भी करे। इससे कुछ सीमा तक विनाश से बचा जा सकता है।

(iii) हमारे प्रिय लेखक : प्रेमचंद

मेरे प्रिय लेखक मुंशी प्रेमचंद जी का जन्म वाराणसी के निकट लमही नामक गांव में 31 जुलाई 1880 में हुआ था उनके पिता का नाम अजायब राय और माता का नाम आनंदी देवी या प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम धनपत राय था उन्हें नवाब राव के नाम से भी जाना जाता था। इनका बचपन अभावों में बिता। 10वीं परीक्षा पास करके इन्होंने 12वीं की परीक्षा में असफल हो जाने पर उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। विद्यार्थी जीवन में इनका विवाह हो गया था। पत्नी के अनुकूल ना होने के कारण इन्होंने दूसरा विवाह किया था जिसका नाम शिवरानी देवी था। मैट्रिक तक होने के बाद एक विद्यालय में अध्यापक हो गए थे। उन्होंने स्वधाई रूप में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए थे। असहयोग आंदोलन प्रारंभ होने पर इन्होंने नौकरी छोड़ दी थी। इराके बाद उन्होंने साहित्य जीवन में प्रवेश करने पर सर्वप्रथम मर्यादा पत्रिका के संपादक के फिर इन्होंने प्रेस खोली लंबी बीमारी के बाद बीमारी के बाद सन् 1936 ई॰ में इनका निधन हो गया।

(iv) नारी सशक्तिकरण

सम्पूर्ण विश्व में महिला सशक्तिकरण की लहर चल रही है। महिला अब गुलाम नहीं। वह स्वतंत्र है। वह अपने अनुसार संसार में जिएगी और संसार का संचालन करेगी। इसके लिए जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा है उसी को कहते हैं–'महिला सशक्तिकरण'।

महिला सशक्तिकरण के लिए ही महिला आरक्षण हेतु भारत की राज्यसभा में पिछले दिनों एक विधेयक पारित किया गया। इससे भारत की महिलाओं में खुशी की लहर दौड़ गयी। भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। यहाँ का प्रजातंत्र महिला सशक्तिकरण का समर्थन कर रही है। यह एक तरह से उन्नति और शांति के लिए उपाय है। 'चूँकि युद्ध की शुरूआत मनुष्य के मन से होती है, इसलिए शांति की सुरक्षा के उपायों की शुरूआत भी वहीं से होनी चाहिए।'

महिलाएँ हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है। इसलिए राष्ट्र के विकास के इस महान् कार्य में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के कार्य को समझा जा सकता है।

समूची सभ्यता में व्यापक बदलाव के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में महिला सशक्तिकरण आन्दोलन बीसवीं शताब्दी के आखिरी दशक का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक विकास कहा जा सकता है।

1970 के दशक में महिला कल्याण की अवधारणा अपनायी गयी। 1980 में महिला विकास पर बल दिया गया। 1990 में महिला अधिकारिता अर्थात् महिला सशक्तिकरण पर ध्यान दिया गया। अब ऐसी संवैधानिक व्यवस्था की जा रही है कि महिलाएँ निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल हों और नीति निर्माण के स्तर पर भी उनकी सहभागिता हो।

महिला सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है 'जिससे दुर्बल और उपेक्षित लोगों या समूहों की क्षमता बढ़े, जिससे वे अपने आपको निम्न आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में डालनेवाले मौजूद शक्ति संबंधों को बदल कर अपने पक्ष में कर सकें। महिला सशक्तिकरण व्यक्तिगत प्रतिरोध और सामूहिक आन्दोलन के रूप में उभर कर सामने आ सकता है।''

महिला सशक्तिकरण का अर्थ ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें महिलाओं की अपने आप को संगठित करने की क्षमता बढ़ती तथा सुदृढ़ होती है। वे लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और परिवार व समाज में भूमिका के आधार पर निर्धारित संबंधों को दरकिनार करते हुए आत्म-निर्भरता विकसित करती हैं। इसके अन्तर्गत विकसित विकल्पों के चयन और संसाधनों के नियंत्रण की उनकी क्षमता के साथ-साथ परिवार और समुदाय के साथ सहभागितापूर्ण संबंधों का लाभ उठाने की उनकी क्षमता भी शामिल है।

महिला सशक्तिकरण से सकारात्मक असर पड़ेगा, बल्कि पुरुषों और बच्चों को भी इससे लाभ होगा। उदाहरण के लिए इस बात के पक्के प्रमाण हैं कि महिलाओं की शिक्षा से लड़कों और लड़कियों दोनों की बाल मृत्यु दर में कमी आई है। भारतीय समाज में महिलाओं की हीन स्थिति की वजह से समाज में व्याप्त सामान्य बदहाली को कारगर तरीके से दूर करने में कामयाबी नहीं मिल पा रही है। इस तरह महिलाओं के माध्यम से बालिकाओं और वयस्क महिलाओं दोनों की खुशहाली सुनिश्चित की जा सकती है।

समासत: महिला मजबूतीकरण आन्दोलन में बुनियादी तौर पर बदलाव आया है। अब राजनीतिक शक्ति बनकर उभर रही हैं। अब भारत सशक्त बनकर उभरेगा।

(v) मोबाइल और विद्यार्थी

आज मोबाइल फोन सभी को जिंदगी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। मोबाइल ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अपने विभिन्न इस्तेमालाओं के कारण मोबाइल फोन काफी प्रचलित हो चुका है। समाज का हर वर्ग अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार इससे लाभ उठा रहा है। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय-हर स्तर के विद्यार्थी की पहली पसंद मोबाइल बन चुका है। आज विद्यार्थी मोबाइल पर इंटरनेट की मदद से कहीं भी बैठ वांछित सामग्री को डाउनलोड करके और उसका प्रिंट लेकर अपनी पढ़ाई को गति प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त देश-विदेश के विभिन्न कॉलेजों में प्रवेश, प्रतियोगिताओं, परीक्षापरिणामों, नौकरी आदि से संबंधित भरपूर जानकारी वह इसी से एकत्रित करता है किन्तु विद्यार्थियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो इसका दुरुपयोग करता है। ऐसे विद्यार्थी आपस में घंटों बेकार में गप्पे हाँकने, जरूरत से ज्यादा मैसेज भेजने, वीडियो गेम्स खेलने, चित्र खींचने और नये-नये मोबाइल खरीदने और उनकी ही बातें करते रहने में अपना समय बर्बाद करते हैं। अत: ऐसे विद्यार्थियों की इसकी उपादेयता समझनी चाहिए और इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

(vi) आतंकवाद

एक समय था जब भारत के पवित्र धरातल पर द्वैतवाद की मन्दाकिनी में भक्ति के सुगन्धित पुंज विकसित होते थे। चारों ओर शान्ति का साम्राज्य होता था। विश्व भर के लिए भारत शान्तिदूत था। सम्राट अशोक ने ''अहिंसा परमो धर्म:'' का संदेश देकर अपने पुत्र और पुत्री को तिब्बत, चीन, श्रीलंका आदि देशों में भेजकर शान्ति स्थापित की थी। देश में अनेक घटनायें घटीं, सत्ता परिवर्तन हुए, विदेशी आक्रमण हुए शताब्दियों तक भारत परतंत्र रहा किन्तु उसका शान्ति का स्वरूप नहीं बदला, यहाँ तक स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य भी अहिंसा द्वारा ही प्राप्त किया गया। स्वतंत्रता संग्राम में उग्रवाद अथवा आतंकवाद का कोई स्थान नहीं था।

किन्तु स्वतंत्र भारत को अपने शैशवकाल से ही आतंकवाद रूपी दानव का सामना करना पड़ा। कभी काश्मीर में पड़ोसी देश के बहकावे में आकर और उकसाने के फलस्वरूप काश्मीर घाटी में निर्दोष व्यक्तियों की हत्या, कभी पंजाब में खालिस्तान के नाम पर किये गए फसाद, कभी पूर्वोत्तर राज्यों में उल्फा संगठनों का उपद्रव तो कभी लिट्टे समर्थकों का बहशीपन भारतीय जनता को सहन करने पड़े। 21 मई, 1991 को लिट्टे समर्थित मानव बम के रूप में किये गए विस्फोट के फलस्वरूप भारत को अपने लोकप्रिय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की बलि देनी पड़ी। 13 मार्च, 1993 को मुम्बई शेयर बाजार जैसे भीड़-भाड़ वाले कई स्थानों पर 13 शृंखलाबद्ध विस्फोट किए गए जिनके फलस्वरूप 257 व्यक्ति मारे गऐ और 1400 बुरी तरह घायल हुए। 13 वर्ष तक मुकदमा चला जिसमें 124 अभियुक्तों को दोषी पाया गया जिन्हें विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत अपराध की संगीनता के आधार पर सजा सुनाई गई। जनवरी-फरवरी 1998 में तीन स्थानों पर जोरदार बम विस्फोट हुआ। ये घटनायें पूर्वोत्तर राज्यों में तथा काश्मीर में होने वाली घटनाओं के अतिरिक्त थीं किन्तु विश्व समुदाय इस ओर से अपनी आँखें मूँद कर मूकदर्शी बना रहा, महाशक्तियाँ इसकी अनदेखी करती रहीं और परिणाम हुआ 11 सितम्बर, 2001 को संयुक्त राज्य अमेरिका पर अत्यन्त सुनियोजित ढंग से किया गया। आतंकवादी आक्रमण जिसके फलस्वरूप न्यूयार्क स्थित विश्व व्यापार संगठन की जुड़वाँ टावर्स ध्वस्त हो गयीं।

अब संयुक्त राज्य अमरीका को आतंकवाद का अनुभव हुआ। जिसे भारत अकेला गत दो दशक से झेलता आ रहा था और महाशक्तियों तथा विकसित पश्चिमी राष्ट्रों से भारत को सहानुभूति के दो शब्द भी नहीं मिल रहे थे जिसे भारत का घरेलू मामला कहते थे अब अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई। समूचा विश्व आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट हो गया। भारत को तो इस संघर्ष में साथ होना ही था। आतंकवादियों और उनके अड्डो की तलाश शुरू हुई और ज्ञात हुआ कि लश्करे तइबा और उसका सरगना ओसामा बिन लादेन द्वारा आयोजित था यह आक्रमण। अत: अफगानिस्तान जो तालिबान के आधिपत्य में था और ओसामा बिन लादेन की शरणस्थली था पर सैनिक कार्यवाही की गई। अफगानिस्तान को तालिबान के चंगुल से मुक्त कराया गया। अमेरिकी द्रोण हवाई हमले में लादेन मारा गया।

13 दिसम्बर, 2001 को पाँच हथियारबंद आतंकियों ने भारतीय संसद भवन पर उस समय आक्रमण किया जब संसद का अधिवेशन चल रहा था। किन्तु भारतीय सुरक्षा बलों की सतर्कता से आक्रमण विफल हो गया और पाँचों आतंकवादी मारे गए। इस मुठभेड़ में सुरक्षा बल के छह जवान और एक माली शहीद हो गए। खोजबीन के बाद निश्चित हो गया कि इस आक्रमण के तार पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठन से जुड़े हुए थे। अत: भारत ने स्पष्ट शब्दों में पाकिस्तान से इन आतंकी संगठनों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की माँग की। जब संयुक्त राज्य आक्रमणकारी संगठन का पीछा करते हुए अफगानिस्तान पर आक्रमण न्यायसंगत हो सकता है तो भारत भी अपने आक्रमणकारी को दंडित करने के लिए पाकिस्तान पर बल प्रयोग क्यों न करें। अत: दोनों देशों में युद्ध की नौबत आ गई। किन्तु विश्व समुदाय और अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के हस्तक्षेप से पाकिस्तानी राष्ट्रपति को आश्वासन देना पड़ा कि पाकिस्तान की भूमि से भारत के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियों का संचालन नहीं होने दिया जाएगा। जनरल मुशर्रफ के इस आशय के बयान के बाद ही स्थिति सामान्य हो सकी।

यद्यपि पाकिस्तान के साथ लिखित समझौता हुआ था कि पाकिस्तान अपनी धरती पर जारी भारत विरोधी गतिविधियों पर लगाम लगाएगा। किन्तु यह वायदा अभी तक पूरा नहीं हो सका है। इस्लामाबाद के सघन सुरक्षा वाले क्षेत्र में भारतीय उच्चायोग के एक समारोह के कुछ घंटे पहले आयोजन स्थल पर आत्मघाती आक्रमण यह स्पष्ट करता है कि पाकिस्तान में भारत विरोधी तत्व कितने सक्रिय हैं। यद्यपि पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने इस घटना की निन्दा करते हुए जाँच के आदेश देने में विलम्ब नहीं की किन्तु यह तो उनकी आदत बन गई है। दुर्भाग्य यह है कि आतंकवाद पर लगाम कसने के मामले में उनकी कथनी और करनी में अन्तर रहा है।

2 दिसम्बर, 2002 को मुम्बई के घाटकोपर क्षेत्र में एक बस में विस्फोट हुआ। जिसमें चार लोग मारे गए और 49 घायल हुए। गुजरात के अक्षरधाम मंदिर में संभावित आक्रमण विफल कर दिया गया और दोनों आतंकवादी ढेर हो गए। 25 अगस्त, 2003 को गेट-वे-ऑफ इण्डिया पर विस्फोट हुए। 29

अक्टूबर, 2005 को दिल्ली के भीड़-भाड़ वाले बाजार में बम विस्फोट हुए। 28 दिसम्बर 2005 को बंगलूर में बंदूकधारियों ने गोली चलाई और हथगोले फेंके। 7 मार्च, 2006 को वाराणसी स्थित संकटमोचन मंदिर को निशाना बनाया गया और एक ही दिन छावनी रेलवे स्टेशन और मंदिर प्रांगण में तीन विस्फोट हुए। 11 जुलाई, 2006 को लोकल ट्रेनों में 8 मिनट के भीतर 7 विस्फोट हुए। आतंकवादी विस्फोट और उसके बाद धरपकड़ फिर कानूनी कार्यवाही भारत की नियति बन गई है।

आतंकवाद वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय समस्या न होकर वैश्विक समस्या बनकर उभरा है। भारत में यह आतंकवाद पाकिस्तान समर्थित होने के कारण भयावह रूप में प्रकट हो रहा है। 2008 में मुम्बई पर हुए 26/11 के हमले ने आतंकवाद के प्रसार को स्पष्ट रूप से जगजाहिर कर दिया। भारत और पाकिस्तान के संबंध में, यह आतंकवाद एक बड़ा बाधक तत्व है। राजनीतिक, कूटनीतिक, खेल कूटनीति, वैचारिक प्रयास आदि के माध्यम से इस आतंकवाद को दमित करने का प्रयास किया जा रहा है। आंतरिक आतंकवाद की समस्या का जनसहभागिता से दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

2. (क) प्रस्तुत पंक्ति 'ओ सदानीरा' शीर्षक यात्रा-संस्मरण से ली गयी हैं इसके लेखक जगदीशचन्द्र माथुर हैं। इस पंक्ति में इन्होंने मनुष्य की पाश्विकता प्रवृति एवं दूषित मानसिकता का वर्णन किया है। मानव ने बड़ी निर्ममता से धरती के ऊपर अनेक अत्याचार किए हैं। उसने हरे-भरे जंगलों का विनाश किया, जिससे धरती निर्वस्त्र हो गई है। उसकी सहनशीलता क्षीण हो गई है, वर्षा कम होना, भूमि एवं नदियों का कटाव, पर्यावरण प्रभावित (प्रदूषित) होना, अनियमित ऋतु परिवर्तन इत्यादि विसंगतियाँ तथा दोष उत्पन्न हो गए हैं, यह है वसुंधरा योगी मानव के काले कारनामें। उसी प्रकार धर्मांध मानव ने अनेकों धर्मस्थलों को तोड़े, मूर्तियों को ध्वस्त किया है, सभ्यताओं एवं संस्कृतियों पर प्रहार किया है, उन्हें क्षति पहुँचाई है। इस प्रकार "वसुंधरा भोगी मानव तथा धर्मांध मानव" दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

(ख) अर्द्धनारीश्वर की कल्पना से इस बात के संकेत हैं कि नर-नारी पूर्ण रूप से समान हैं एवं उनमें से एक के गुण दूसरे के दोष नहीं हो सकते। दिनकर पाते हैं कि यह दृष्टि रवीन्द्रनाथ के पास नहीं है। वे नारी के गुण यदि पुरुष में आ जाएँ तो उसको दोष मानते हैं। नारियों को कोमलता ही शोभा देते हैं। वे कहते हैं कि—

नारी यदि नारी हय
की होइवे कर्म-कीर्ति, वीर्यवल, शिक्षा-दीक्षा तार ?

अर्थात् नारी की सार्थकता उसकी भंगिमा के मोहक और आकर्षक होने में है, केवल पृथ्वी की शोभा, केवल आलोक, केवल प्रेम की प्रतिमा बनने में हैं। कर्मकीर्ति, वीर्यबल और शिक्षा-दीक्षा लेकर वह क्या करेगी ? प्रेमचन्द ने कहा है कि "पुरुष जब नारी के गुण लेता है तब वह देवता बन जाता है, किन्तु नारी जब नर के गुण सीखती है तब वह राक्षसी हो जाती है।"

(ग) भावार्थ—गुणवान मुहम्मद कवि का एक ही नेत्र था। किन्तु फिर भी उनकी कवि-वाणी में वह प्रभाव था कि जिसने भी सुनी वही विभुग्ध हो गया। जिस प्रकार विधाता ने संसार में सदोष, किन्तु प्रभायुक्त चन्द्रमा को बनाया है, उसी प्रकार जायसी जी की कीर्ति उज्जवल थी किन्तु उनमें अंग-भंग दोष था। उनका वह नेत्र अन्य मनुष्यों के नेत्रों से उसी प्रकार अपेक्षाकृत तेज युक्त था। जिस प्रकार कि तारागण के बीच में उदित हुआ शुक्रतारा।

(घ) प्रस्तुत सारगर्भित पंक्तियाँ 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता से उद्धृत है। यह संवेदनशील कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई है। कवितांश में पुत्र-विछोह से उपजे विषाद का मार्मिक चित्रण है। कवयित्री के भग्न हृदय के शोकाकुल उद्‌गार मानवीय संवेदना को झकझोर देते हैं।

कवयित्री के प्राण तड़प रहे हैं, उसकी व्याकुलता वर्णनातीत है। अशान्त मन बेचैन है। खोए हुए धन की तरह अपना बेटा अब अपने पास नहीं रहा। इसमें तनिक भी संदेह नहीं रह गया है।

कवयित्री अपने बेटे को खोकर व्यथित है, उसके मन की शान्ति अपहृत हो गई है। वह अमूल्य धरोहर अब उसके पास नहीं है। भविष्य में वह उसे पुनः प्राप्त नहीं कर सकेगी।

3. सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय
केंद्रीय उच्च विद्यालय
कुमारध्रुवी
विषय : छात्रवृत्ति प्राप्त करने हेतु।
श्रीमान्‌जी

सविनय निवेदन है कि आपके विद्यालय में दशम ए का छात्र हूँ। मेरा अब तक पढ़ाई का रिकार्ड अच्छा रहा है। गत वर्ष मैंने 90 अंक प्राप्त किए थे। पढ़ाई के साथ-साथ भाषण-प्रतियोगिता में भी अग्रणी रहा हूँ।

मान्यवर, इस वर्ष मेरे पिताजी अस्वस्थ हो गए हैं जिसके कारण उनका व्यवसाय ठप्प हो गया है। घर की आर्थिक दशा कमजोर हो गई है। मेरे पिताजी मेरी पढ़ाई का खर्च वहन करने में समर्थ नहीं है। अतः आपसे निवेदन है कि मुझे इस वर्ष 500 रु॰ मासिक की छात्रवृत्ति प्रदान करें ताकि मेरी पढ़ाई चलती रहे। इस सहयोग और कृपा के लिए मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।

धन्यवाद
आपका आज्ञाकारी
आलोक शर्मा
कक्षा-दशम 'ए'
दिनांक 03.06.2024

अथवा,

सुभाष चौक
हाजीपुर
दिनांक 15.03.2024

प्रिय मित्र सुरेश,
नमस्ते।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ आशा करता हूँ आप भी परिवार सहित सकुशल होंगे।

जैसा कि आप जानते हैं वर्तमान में कोरोना महामारी सर्व व्याप्त है और विगत वर्ष से विद्यालय बंद है। बंद की स्थिति में भी मैंने अपनी पढ़ाई सतत रूप से जारी रखी है। आशा करता हूँ आप ने भी अपनी पढ़ाई जारी रखी होगी।

इस वर्ष ऑनलाइन माध्यम, रेडियो, टी. वी. डिजीलेप विडिओ और हमारे शिक्षक महोदय के द्वारा हम छात्रों से सतत संपर्क से हमारी पढ़ाई जारी रही। हाँ कभी-कभार व्यवधान हुआ किंतु काफी हद तक हमने अपनी पढ़ाई को जारी रखने में सफलता प्राप्त की। गुरुजी के संपर्क के दौरान उन्होंने जो कुछ भी मुझसे पूछा या हल करने को कहा तो मैंने पूरी कोशिश की उनको संतुष्ट कर सकूँ। साथ ही मूल्यांकन आधारित वर्कशीट्स में प्राप्तांकों के आधार पर गुरुजी ने बताया कि मेरी पढ़ाई बेहतर है।

शेष शुभ, आंटी जी एवं अंकल जी को प्रणाम। अनुजों को स्नेह।

आपका मित्र
जितेन्द्र

4. (i) चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ का प्रमुख कारण जंगलों का कटना है। वन के वृक्ष जल राशि को अपनी जड़ों में थामे रहते हैं। नदियों को उन्मुक्त नवयौवना बनने से बचाते हैं। उत्ताल वृक्ष नदी की धाराओं की गति को भी संतुलित करने का काम करते हैं। यदि जलराशि नदी की सीमाओं से ज्यादा हो जाती है, तब बाढ़ आती ही हैं, लेकिन जब बीच में उनकी शक्तियों को ललकारने वाले ये गगनचुम्बी वन न हो तब नदियाँ प्रचंड कालिका का रूप धारण कर लेती हैं। वृक्ष उस प्रचंडिका को रोकने वाले हैं। आज चंपारण में वृक्ष को काट कर कृषियुक्त समतल भूमि बना दी गई है। अब उन्मुक्त नवयौवना को रोकने वाला कोई न रहा, इसलिए ये अपनी ताकत का एहसास कराती हैं। लगता है मानो मानव के कर्मों पर अट्टाहास कराने के लिए, उसे दंड देने के लिए नदी में भयानक बाढ़ आते हैं।

(ii) भगत सिंह महान क्रान्तिकारी और स्वतंत्रता सेनानी और विचारक थे। भगतसिंह विद्यार्थी और राजनीति के माध्यम से बताते हैं कि विद्यार्थी को पढ़ने के साथ ही राजनीति में भी दिलचस्पी लेनी चाहिए। यदि कोई इसे मना कर

रहा है तो समझना चाहिए कि यह राजनीति के पीछे घोर षड्यंत्र है। क्योंकि विद्यार्थी युवा होते हैं। उन्हीं के हाथ में देश की बागडोर है। भगत सिंह व्यावहारिक राजनीतिक का उदाहरण देते हुए नौजवानों को यह समझाते हैं कि महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस का स्वागत करना और भाषण सुनना यह व्यावहारिक राजनीति नहीं तो और क्या है। इसी बहाने वे हिन्दुस्तानी राजनीति पर तीक्ष्ण नजर भी डालते हैं। भगत सिंह मानते हैं कि हिन्दुस्तान को इस समय ऐसे देश सेवकों को जरूरत है जो तन-मन-धन देश पर अर्पित करदें और पागलों की तरह सारी उम्र देश की आजादी या उसके विकास में न्योछावर कर दे। क्योंकि विद्यार्थी देश-दुनिया के हर समस्याओं से परिचित होते हैं। उनके पास अपना विवेक होता है। वे इन समस्याओं के समाधान में योगदान दे सकते हैं। अत: विद्यार्थी को पॉलिटिक्स में भाग लेनी चाहिए।

(iii) प्रस्तुत प्रश्न चंद्रधर शर्मा गुलेरी रचित कहानी "उसने कहा था" से संबंधित है। फिरंगी मेम के बाग में मखमल की भी हरी घास थी।

(iv) लेखक मलयज डायरी लेखन को सुरक्षित नहीं मानता है। लेखक इस बात से सहमत नहीं कि हम यथार्थ से बचने के लिए डायरी लिखें और अपने कर्तव्य का इतिश्री समझें। यह तो वास्तविकता से मुँह मोड़ना हुआ। यह पलायन है, कायरता है। हम यह नहीं कह सकते कि हम अपनी गलतियों, अपनी पराजय को डायरी लिखकर छिपा सकते हैं। यह एक छद्म आवरण की भाँति होगा, जिसे रोशनी की एक लकीर भी तोड़ सकता है।

लेखक के अनुसार सुरक्षा इन चुनौतियों को जीने में है। जीवन के खट्टे स्वादों से बचने के लिए हम अपनी जीभ काट लें यह कहाँ की चतुरता है, इससे तो हम मोटे स्वाद से भी वंचित हो जाएँगे। सुरक्षा कठिनाइयों का डटकर मुकाबला करने में है, अपने को बचाने में नहीं। लेखक डायरी को मुसीबतों से बिना लड़े पलायन जाने के रूप में देखता है।

(v) कवि बंधी हुई मुट्ठियों के लक्ष्य के माध्यम से जनता की ताकत का एहसास कराना चाहता है जो किसी भी विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर सकती हैं। यह ताकत इतनी ताकतवर होती है कि जन-शोषक शत्रु को सत्ताच्युत कर देती है। मुट्ठियों की ताकत सामान्य जनता की ताकत है। यदि इस ताकत के साथ कोई खिलवाड़ करे तो उसकी मिट्टी पलीद हो जाती है। चाहे वह कितना भी बड़ा जन-शोषक क्यों न हो, जब यह क्रुद्ध होती है तो अपनी ज्वाला में जलाकर राख कर देती है। अत: कवि बंधी हुई मुट्ठियों के माध्यम से जन-शोषक को इनसे न टकराने की नसीहत देता है।

(vi) उपर्युक्त पंक्ति में 'अंब' का संबोधन माँ सती के लिए किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने सीताजी को सम्मानसूचक शब्द 'अब' के द्वारा उनके प्रति सम्मान की भावना प्रदर्शित की।

प्रथम पद में तुलसीदास सीता जी को माँ कहकर संबोधित करते हैं, वे कहते हैं कि माँ। जब कभी आप उचित अवसर समझें तब कोई करुण प्रसंग चलाकर श्रीराम कीदयाई मन:स्थिति में मेरी याद दिलाने की कृपा करना। तुलसीदास अपनी दयनीय स्थिति श्रीराम को बताकर अपनी बिगड़ी बात बनाना चाहते हैं। अर्थात् वे अपने दुर्दिनों का नाश करना चाहते हैं। वे माँ से अनुनय विनय करते हैं कि वे ही उन्हें इस भवसागर से पार करा सकते हैं। वे कहते हैं कि हे माँ। मेरा उद्धार तभी होगा जब आप श्रीराम से मेरे लिए अनुनय विनय करके मेरा उद्धार करवाओगी। उन्हें श्रीराम पर अटूट श्रद्धा तथा विश्वास है।

(vii) दर्पण स्वच्छ और निर्मल होता है, ठीक उसी प्रकार कवि की आँख है। कोई भी व्यक्ति अपनी छवि जिस प्रकार साफ एवं स्पष्ट रूप से दर्पण में देख पाता है, ठीक उसी प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता और पारदर्शिता का प्रतीक है। कवि अपनी निर्मल वाणी द्वारा सारे जनमानस को प्रभावित करता है। जैसी छवि वैसा ही प्रतिबिंब दर्पण में उभरता है। महाकवि जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसीलिए की है।

(viii) 'कवि के अनुसार सत्ता पक्ष के जन प्रतिनिधियों आज अधिनायक का रूप ले लिए हैं। वे ही आज राष्ट्रीय गान के समय आम आदमी को जुटाकर अपनी जय-जयकार मनवाते हैं। माला पहनते हैं और जन-जन के प्रतिनिधि होने अपने को जनता का भाग्य विधाता मानते हैं।

(ix) 16 अगस्त, 1904 को सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म निहालपुर, इलाहाबाद (उ.प्र.) में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती धीराज कुँवरी और पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। सन् 1919 में इनका विवाह ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से खांडवा, मध्यप्रदेश में हुआ। लेखिका के पति अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त 'कुली प्रथा और गुलामी का नशा' नामक नाटकों के लेखक एक प्रसिद्ध पत्रकार, अच्छे स्वतंत्रता सेनानी और कांग्रेस के सक्रिय नेता थे। लेखिका को आरम्भिक शिक्षा क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल, इलाहाबाद में हुई जहाँ इनके साथ प्रसिद्ध कवयित्री महोदवी वर्मा भी थीं। इसके पश्चात् वाराणसी में थियोसोफिकल स्कूल के नौवीं कक्षा के बाद अधूरी शिक्षा शिक्षा छोड़कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़ीं। छात्र जीवन से ही इन्हें काव्य रचना की भी अभिरुचि थी। आगे चलकर एक अच्छी कवयित्री एवं साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा भी पायीं।

लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान अपने जीवनकाल में समाज सेवा, स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय भागीदारी, राजनीति करते हुए अनेक बार कारावास भी गर्मी। अन्त में मध्यप्रदेश के एक विधानसभा में एम. एल. ए. बनकर अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन और जागरण में सक्रिय भूमिका निभाते हुए वसंत पंचमी के दिन इस संसार से "नवश्रृजन के महापर्व" करके चल पड़ी।

(x) बटिया अपने आसपास उपस्थित लोहे को पहचान जाती है। उसके आस-पास चिमटा, करहुल, अँगीठी, सँड़सी, दरवाजे की साँकल, कच्चे उसमें लगी कीलें आदि हैं, जिनमें वह लोहे को पहचानती हैं।

5. (i) 'रोज' कथा साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रणेता महान् कथाकार सचिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय की सर्वाधिक चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में 'संबंधों' की वास्तविकता को एकान्त वैयक्तिक अनुभूतियों से अलग ले जाकर सामाजिक संदर्भ में देखा गया है। मध्यवर्ग की पारिवारिक एकरसता को जितनी मार्मिकता से कहानी व्यक्त कर सकी है वह उस युग की कहानियों में विरल है।

लेखक अपने दूर के रिश्ते की बहन मालती जिसे सखी कहना उचित है, से मिलने अठारह मील पैदल चलकर पहुँचता है। मालती और लेखक का जीवन इकट्ठे खेलने, पिटने स्वेच्छा एवं स्वच्छंदता तथा भ्रातृत्व के छोटेपन बँधनों से मुक्त बीता था। आज मालती विवाहिता है, एक बच्चे की माँ भी है। वार्तालाप के क्रम में आए उतार-चढ़ाव में लेखक अनुभव करता है कि मालती की आँखों में विचित्र-सा भाव है, मानो वह भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रही हो, किसी बीती बात को याद करने की, किसी बिखरे हुए वायुमंडल को पुन: जगाकर गतिमान करने की, किसी टूटे हुए व्यवहार तंतु को पुनजीर्वित करने की, और चेष्टा में सफल न हो चिर विस्मृत हो गया हो। मालती रोज कोल्हू के बैल की तरह व्यस्त रहती है। उसका जीवन ग्रैंग्रीन मर्ज के समान है जिसका ऑपरेशन उसके डॉक्टर पति द्वारा किया जाता है। पूरे दिन काम करना, बच्चे की देखभाल करना और पति का इंतजार करना इतने में ही मानों उसका जीवन सिमट गया है।

वातावरण, परिस्थिति और उसके प्रभाव में ढलते हुए एक गृहिणी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक उद्घाटन अत्यंत कलात्मक रीति से लेखक यहाँ प्रस्तुत करता है। डॉक्टर पति के काम पर चले जाने के बाद का सारा समय मालती को घर में एकाकी काटना होता है। उसका दुर्बल, बीमार और चिड़चिड़ा पुत्र हमेशा सोता रहता है या रोता रहता है। मालती उसकी देखभाल करती हुई सुबह से रात ग्यारह बजे तक घर के कार्यों में अपने को व्यस्त रखती है। उसका जीवन ऊब और उदासी के बीच यंत्रवत चल रहा है। किसी तरह के मनोविनोद, उल्लास उसके जीवन में नहीं रह गए हैं। जैसे वह अपने जीवन का भार ढोने में ही घुल रही हो।

इस प्रकार लेखक मध्यवर्गीय भारतीय समाज में घरेलू स्त्री के जीवन और मनोदशा पर सहानुभूतिपूर्ण मानवीय दृष्टि केन्द्रित करता है। कहानी के गर्भ में अनेक सामाजिक प्रश्न विचारोत्तेजक रूप में पैदा होते हैं।

(ii) गाँधी जी शिक्षा का मतलब सुसंस्कृत बनाने और निष्कलुष चरित्र निर्माण समझते थे। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे आचार्य पद्धति के समर्थक थे अर्थात् बच्चे सुसंस्कृत और निष्कलुष चरित्र वाले व्यक्तियों के

सानिध्य से ज्ञान प्राप्त करें। अक्षर ज्ञान को वे इस उद्देश्य की प्राप्ति में विधेय मात्र मानते थे।

वर्तमान शिक्षा पद्धति को वे खौफनाक और हेय मानते थे क्योंकि शिक्षा का मतलब है–बौद्धिक और चारित्रिक विकास, लेकिन यह पद्धति उसे कुंठित करती हैं। इस पद्धति में बच्चों को दस्तावेज रटाया जाता है ताकि आगे चलकर वे क्लर्क का काम कर सकें, उनका सर्वांगीण विकास से कोई सरोकार न हो।

जीविका के लिए नये साधन सीखने के इच्छुक बच्चों के लिए वे औद्योगिक शिक्षा के पक्षधर थे। तात्पर्य यह न था कि हमारी परंपरागत व्यवसाय में खोट है वरन् यह कि हम ज्ञान प्राप्त कर उसका उपयोग अपने पेशे और जीवन को परिष्कृत करने में करें।

(iii) दलविहीन लोकतंत्र सर्वोदय विचार का मुख्य राजनीतिक सिद्धान्त है और ग्राम सभाओं के आधार पर दलविहीन प्रतिनिधितव स्थापित हो। दलविहीन लोकतंत्र तो मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद के मूल उद्देश्यों में से है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज जैसे-जैसे साम्यवाद की ओर बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे राज्य-स्टेट का क्षय होता जाएगा और अंत में एक स्टेटलेस सोसाइटी कामय होगी। वह समाज अवश्य ही लोकतांत्रिक होगी, बल्कि उसी समाज में लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप प्रकट होगा और यह लोकतंत्र निश्चय ही दलविहीन होगा।

(iv) भावार्थ—गुणवान मुहम्मद कवि का एक ही नेत्र था। किन्तु फिर भी उनकी कवि-वाणी में वह प्रभाव था कि जिसने भी सुनी वही विमुग्ध हो गया। जिस प्रकार विधाता ने संसार में सदोष, किन्तु प्रभावयुक्त चन्द्रमा को बनाया है, उसी प्रकार जायसी जी की कीर्ति उज्जवल थी किन्तु उनमें अंग-भग दोष था। जायसी जी समदर्शी थे क्योंकि उन्होंने संसार को सदैव एक ही आँख से देखा। उनका वह नेत्र अन्य मनुष्यों के नेत्रों से उसी प्रकार अपेक्षाकृत तेज युक्त था। जिस प्रकार कि तारागण के बीच में उदित हुआ शुक्रतारा। जब तक आम्र फल में डाभ काला धब्बा (कोइलिया) नहीं होता तबतक वह मधुर सौरभ से सुवासित नहीं होता। समुद्र का पानी खारयुक्त होने के कारण ही वह अगाध और अपार है। सारे सुमेरु पर्वत के स्वर्णमय होने का एकमात्र यही कारण है कि वह शिव-त्रिशूल द्वारा नष्ट किया गया, जिसके स्पर्श से वह सोने का हो गया। जब तक घरिया अर्थात् सोना गलाने के पात्र में कच्चा सोना गलाया नहीं जाता तबतक वह स्वर्ण कला से युक्त अर्थात् चमकदार नहीं होता। जायसी अपने संबंध में गर्व से लिखते हुए कहते हैं कि वे एक नेत्र के रहते हुए भी दर्पण के समान निर्मल और उज्जवल भाव वाले हैं। समस्त रूपवान व्यक्ति उनका पैर पकड़कर अधिक उत्साह से उनके मुख की ओर देखा करते हैं। यानि उन्हें नमन करते हैं।

(v) जीवनी–कविवर ज्ञानेंद्रपति का जन्म 1 जनवरी, 1950 को पत्थर गामा, गोड्डा, झारखंड में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती सरला देवी तथा पिता जी का नाम श्री देवेन्द्र प्रसाद चौबे है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई। बी. ए. तथा एम. ए. (अंग्रेजी) की परीक्षा पटना विश्वविद्यालय से पास की। तत्पश्चात् हिन्दी विषय में एम. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से किया। अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् बिहार लोकसेवा आयोग द्वारा चयनित होकर कारा-अधीक्षक के पद पर पदस्थापित हुए। अपने कार्यकाल में उन्होंने कैदियों के लिए अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए। अन्ततः नौकरी छोड़कर पूर्णरूपेण कविता लेखन कार्य में लग गए। अपना निवास स्थान वाराणसी (उत्तर प्रदेश) को बनाया है।

एक प्रखर एवं तेजस्वी युवा कवि के रूप में ज्ञानेन्द्रपति बीसवीं शदी के आठवे दशक में उदित हुए। अपने शब्द चयन, भाषा संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में अद्वितीय क्षमता के कारण उन्होंने हिन्दी कविता के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। 1980 में आए अपने दूसरे कविता संग्रह से उन्होंने विचारशील पाठकों और विवेकवान आलोचकों को अपनी प्रतिभा, काव्य ऊर्जा और स्वाधीन सामर्थ्य से आश्वस्त किया। "गंगा तट" नामक संग्रह के द्वारा अपने समकालीनों के बीच उन्होंने अदभूत सर्जनात्मक स्थैर्य और धैर्य प्रमाणित कर दिखाया है। उनकी कविता के उत्स विपुल और बहुरूप हैं।

रचनाएँ–उनका कविता संग्रह 'आँख हाथ बनते हुए' 1970 में प्रकाशित हुआ। सन् 1980 में "शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है", का प्रकाशन हुआ। इसके अतिरिक्त गंगातट (2000), संशयात्मा (2004), भिनसार (2006), कवि ने कहा (2007) इनके अन्य कविता संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त गद्य लेखन में भी आपने अभिरूचि दिखाई। पढ़ते-गढ़ते, एकचक्रानगरी (काव्य नाटक) इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

कविता का सारांश–ज्ञानेन्द्रपति समकालीन कवि हैं। वे नवपूँजीवाद और आर्थिक उदारवादी के कारण ग्रामीण संस्कृति में जो बहुआयामी बदलाव आया है, जिससे संस्कृति को नष्ट हुआ देख दुखी होते हैं। उन्होंने जो बचपन के दिन गुजारे हैं वह स्मृतियों में बस जाता है। इसलिए वे गाँव का घर याद करते हैं। कवि घर के अंत:पुर की चौखट याद करता है वह देखता है कि घर के चौखट से पार होकर जैसे ही बाहर निकलता है तो बदलाव देखकर क्षुब्ध होता है। वह तरह-तरह के उपमाओं द्वारा कहता है कि जिस घर के भीतर खाँस कर आना पड़ता था अर्थात् घर नयी कन्याओं के आने पर बुजुर्ग लोग घर में प्रवेश करने से पहले खाँसते हैं, खड़ाऊ खटकाते हैं या रूककर पुकारते हैं यह सब नयी संस्कृति के प्रभाव से नष्ट हो रहा है। कवि अपनी इस परम्परा को खोना नहीं चाहता है। इसलिए गाँव का घर बराबर उसकी स्मृतियों में आते हैं। उस गाँव में जब भी कोई लड़ाई-झगड़ा होता था तो लोग पंच परमेश्वर बनकर उसका निदान करते थे परंतु अब अदालतों का चक्कर काटना पड़ता है। यही नहीं अब लालटेन का प्रकाश नहीं दिखता बल्कि बिजली आ गयी है। बेटे के विवाह के दहेज में टी०वी० माँगने लगे हैं। अब लोकगीतों की धुन कम सुनाई पड़ती है उसकी जगह मदमस्त आर्केस्ट्रा ने ले ली है। उस लोकसंस्कृति में कहाँ होरी-चेता विरहा-आल्हा गूँजते थे अब वह शोकगीत के समान लगता है। पहले सर्कस दिखाए जाते थे अब वह मानों कहीं खो गया है। गाँव की संस्कृति वैसी प्रतीत होती है जैसे हाथी का गजदंत नहीं हो। हाथी का सौन्दर्य उसके दाँत होते हैं। दाँत को बिछुड़ने पर वह दन्तविहीन हो जाता है उसी प्रकार गाँव का सौन्दर्य उसकी लोक संस्कृति है। वह उन्हीं गजदंतों के समान टूट गया। कवि शहर की चकाचौंध में देखता है कि लोग बीमारी के कारण अस्पतालों में और लड़ाई झगड़े के कारण अदालतों का चक्कर काट रहे हैं। गाँव के घर की रीढ़ इनसे काँप उठती है अर्थात ग्रामीण संस्कृति को चोट पहुँचता है।

(vi) 'नदियों की वेदना' जिंदगी की धारा के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। नदी की धारा स्वच्छ, निर्मल, कलख करती हुई प्रवाहित होती है, वह अपने साथ नये जीवन संचार को प्रवाहित करती चलती है। लेकिन जन-शोषक अर्थात् पूँजीवादी व्यवस्था के कारण सामान्य जनता में स्वच्छ निर्मल, कोमल जीवन का संचार नहीं हो पा रहा है। जनता इस व्यवस्था से आक्रांत है, त्रस्त है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नदियों की वेदना का कारण सामान्य जनता का दु:ख दर्द एवं संताप है।

6. (i) शीर्षक : बिजली की संयमित खपत

संक्षेपण—बहुपयोगी और सर्वाधिक सुविधाजनक ऊर्जा होने तथा आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण एवं जनसंख्या में वृद्धि के चलते बिजली (विद्युत्) की माँग में तीव्र वृद्धि हुई है। इसकी संभावित खपत और कमी को ध्यान में रखते हुए इसके संयमित उपयोग पर ध्यान देना अनिवार्य है।

मूल शब्द : 123 संक्षेपण : 41

(ii) शीर्षक : सभ्यता और संस्कृति

संक्षेपण—सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे के पुरक हैं। सभ्यता का संबंध वर्तमान से तथा संस्कृति भविष्य या अतीत पर आधारित हैं। इसलिए सभ्यता अस्थायी एवं संस्कृति स्थायी होती है।

मूल शब्द : 89 संक्षेपण : 28

❑❑❑